REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

# हिन्दू धर्म में महिलाओं की धार्मिक स्थिति–एक अध्ययन

श्रीमती विनयप्रभा मिंज
सहा. प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शास. एन. के. महाविद्यालय, कोटा
जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

## प्रस्तावना–

हिन्दू दर्शन में महिलाओं की भूमिका 3000 साल पहले की है, हिन्दू दर्शन के विचारों को शामिल करते हुए पेचलिस कहते हैं जो कि प्रकृति और पुरूष के विचारों को शामिल करते हैं जो वर्तमान स्थिति की बातचीत और उत्पादन करने के लिए एक साथ आते हैं, ब्रम्हांड हिन्दू धर्म इन दो अवधारणाओं के संबंध में, अन्योन्याश्रयता और पूरक प्रकृति को मानता है– प्रकृति और पुरूष, महिला और पुरूष सभी अस्तित्व का आधार है जो हिन्दू परंपराओं में महिलाओं कह स्थिति का एक प्रारंभिक बिन्दु है।

भारत एक धर्म–प्रधान देश है और यहां हिन्दू–धर्मावलंबी बहुतायत में हैं। धर्म यहां लोगों की जीवन शैली पर सर्वप्रमुख रूप में राज करता है और धर्म के ठेकेदारों ने यहां पुरूष वर्चस्व को कायम रखते हुए धर्म के संरक्षक, पालनकर्ता आदि प्रमुख पदों पर पुरूषों को ही रखा और पुरूषों की सोच को ही महत्व दिया यहां नारी को अपवित्र की संज्ञा दी गई जिससे वह धार्मिक कार्यों से अनुष्ठानों से लगभग वर्जित ही कर दी गई बृहस्पतिवार व्रतकथा के अंतर्गत नारी को ब्रम्हाजी द्वारा शापित भी बताया गया है।

भारतीय समाज में धर्म की परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। यह स्वीकार किया जाता है कि धर्म से जीवन के विविध पक्ष गतिशील होते हैं। धर्म की अवधारणा भारतीय चिंतन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवधारणा है। आमतौर पर यह मान्यता रही है कि हिन्दू महिलाएं धर्म के प्रति आस्था और विश्वास करने वाली हैं। पुरूषों की अपेक्षा उनमें धर्म परायणता का भाव अधिक होता है। नगरीय चकाचौंध के बावजूद हिन्दू महिलाएं परम्परावादी और धार्मिक आस्थामूलक होती है। आज के बदलते परिवेश में धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, और प्रथाओं में थोड़ा उतार–चढ़ाव अवश्य देखने को मिलता है, फिर भी महिलाओं में धर्म के प्रति अधिक निष्ठा एवं दृढ़ता दिखाई पड़ती है। समाज में तमाम बंधनों औ बाध्यताओं के बावजूद भी वह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति किसी न किसी माध्यम से अवश्य दर्ज कराती रही है। समाज में परिवर्तन का प्रभाव कहीं न कहीं महिलाओं की भी जीवन शैली में अवश्य दिखाई पड़ता है। बावजूद इसके इनमें धर्म के प्रति पूर्ण आस्था दिखाई पड़ती है।

एक महत्वपूर्ण विचार जो हिन्दू दर्शन को अन्य धर्मों से अलग करता है, वह है इसी लिंग–तटस्थता। हिन्दू धर्म शायद एकमात्र जीवित धर्म है जहां स्त्रीत्व की पूजा होती है। ऋग्वेद के अनुसार स्त्री ऊर्जा, जो शाश्वत और अनंत है, ब्रह्माण्ड का सार है। यह सभी पदार्थ और चेतना, अमूर्त और अनुभवजन्य वास्तविकता, और हर चीज की आत्मा का निर्माता है। दिवाली से लेकर दूर्गा पूजा तक, विभिन्न हिन्दू त्यौहार देवी–देवताओं को समर्पित हैं। कुछ प्रमुख हिन्दू महिला देवता दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, राधा, वैष्णो देवी आदि हैं। देवी

उपासना का यह अनूठा तत्व हिन्दू धर्म को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म बनाने में बड़ा योगदान है। हिन्दू धर्म को दुनिया का सबसे पुराना धर्म कहा जाता है। सनातन धर्म (शाश्वत धर्म) के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय धर्म को मानव इतिहास से पहले ही अपनी उत्पत्ति खींचने के लिए माना जाता है। हालांकि, कई इतिहासकारों का दावा है कि यह सिंधु घाटी में 2300 ईसा पूर्व और 1500 ईसा पूर्व के बीच कहीं स्थापित किया गया था। सनातन धर्म के बारे में एक और खूबसूरत बात यह है कि अन्य धर्मों के विपरित इसका कोई एकल संस्थापक नहीं है। इसके बजाय यह विभिन्न मान्यताओं और दर्शनों का एक समामेलन है।

## रामायण काल एवं महाभारत काल में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

दो हिन्दू महाकाव्यों, रामायण एवं महाभारत में महिलाओं की भूमिका मिश्रित है। महाभारत में मुख्य महिला पात्र द्रौपदी का विवाह सभी पांचों पांडवों से हुआ है। इस प्रकार उनके पांच पति है। दुर्योधन द्वारा उसका अपमान किया जाता है, जो महायुद्ध के कारणों में से एक है। पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में रचित रामायण में सीता का सम्मान, सम्मान और अविभाज्य प्रिय के रूप में देखा जाता है, लेकिन उन्हें एक गृहिणी, आदर्श पत्नी, और राम की साथी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दू परंपरा में रामायण की अधिकांश महिलाओं की मौखिक रीटेलिंग अपवाद के बजाय स्वायत्तता को नियम के रूप में दर्शाती है लेकिन सुगिरथराजा कहती है कि ये संस्करण हाल के मूल के हैं।

महाकाव्य कहानियां हैं, लेकिन धर्म के उपदेशों ने उन्हें अंतर्निहित किया है जो महाकाव्यों की रचना के समय हिन्दू धर्म में महिलाओं के बारे में कथित धारणाओं का सुझाव देते हैं। महाभारत, पुस्तक 1 हमें उदाहरण के लिए कहता है

> कोई भी पुरूष क्रोध में भी ऐस कुछ न करे
> जो उसकी पत्नी के लिए अप्रिय होः सुख,
> आनंद, पुण्य और सब कुछ पत्नी पर निर्भर
> है। पत्नी वह पवित्र भूमि है जिसमें पति का
> फिर से जन्म होता है, ऋषि भी स्त्री के बिना
> पुरूष नहीं बना सकते।
>
> – आदि पर्व, महाभारत पुस्तक

## वैदिक काल में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समान ही अनेक अधिकार प्राप्त थे। उस समय महिलाएं अनेक क्षेत्रों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती थी। ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को उस काल के उच्च ज्ञान को ग्रहण करने की भी अनुमति थी। उस समय उच्च ज्ञान को ब्रम्हज्ञान कहा जाता था। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा वैदिक युग की प्रमुख महिला दार्शनिक थी। गार्गी, ऋषि वाचकन्वी की बेटी थी और वह वैदिक समय की एक महान विद्वान थी। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा ने ऋग्वेद के दो छंदों की रचना की। मैत्रेयी ऋषि मैत्री की पुत्री थी।

नारी का रजस्वला होना उसकी अपवित्रता माना गया और कहा गया कि वह इस कारण न तो व्यास गद्दी पर बैठ सकती है। रामायण पाठ के लिए जिस आसन पर बैठते हैं उसे व्यास गद्दी कहा जाता है और जब व्यास गद्दी पर नहीं बैठ सकती तो रामायण पाठ के सर्वथा अयोग्य है और यह चलन तो आज भी कथित आधुनिक, अभिजात्य व उच्च शिक्षित घरों में भी प्रचलन में है जहां रामायण पाठ आदि के लिए पुरूष ही अधिकारी माने जाते हैं और वे ही रामायण पाठ करते हैं। नारी के लिए उसकी अपवित्रता का बहाना बना उसे यज्ञ, वेद अध्ययन से वंचित रखा जाता है और कहा जाता है कि वह इतने कठोर नियमों का पालन नहीं कर सकती, उसके लिए तो घर परिवार की सेवा में ही यज्ञादि का फल निहित है।

इसी अशुद्धता को अवलंब बना नारी को धार्मिक क्रियाकलापों से बहिष्कृत की श्रेणी में ला खड़ा किया गया। उसे ''ओम्'' शब्द के उच्चारण से प्रतिबंधित किया गया। सोलह संस्कारों में से केवल विवाह संस्कार ही नारी के लिए रखा गया और वह भी इसलिए क्योंकि यहां उसका संबंध एक पुरूष से जुड़ता है और पुरूष का नारी से मिलन ही उसके इस संस्कार की वजह बना। यह भी संभव था कि यदि पुरूष का पुरूष से ही विवाह

हो सकता होता तो नारी इस संस्कार से वंचित कर दी जाती। स्त्रियों को उपनयन संस्कार से भी वंचित रखा जाने लगा जिससे उनका अग्निहोत्र व वेद और स्वाध्याय का अधिकार भी छीन लिया गया।

## उत्तर वैदिक काल में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

उत्तर वैदिक ईसा काल के 600 वर्ष पूर्व से लेकर ईसा के 300 वर्ष बाद तक का युग उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। इस काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। वैदिक काल में पिण्डदान इत्यादि के लिए पुत्र जन्म की कामना रहती थी लेकिन पुत्री के जन्म पर भी कोई विशेष आपत्ति नहीं होती थी। उत्तर वैदिक युग में पुत्री के जन्म को बुरा माना जाने लगा। इस युग में महिलाओं के धार्मिक अधिकारों को सीमितकर दिया गया। इस काल में महिलाओं को यज्ञादि कर्मों, बाल विवाहों का प्रचलन तथा विधवा पुनर्विवाह पर रोक लगाना शुरू हो गया था।

## मध्यकाल में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

11वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के काल को मध्यकाल कहा जा सकता है। इस काल को स्त्रियों की दृष्टिकोण से काला युग कहा जा सकता है। भारत में राजाओं की आपसी फूट का फायदा मुसलमानों ने उठाया और भारत देश पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया। कुछ एक बादशाहों ने जोर–जबरदस्ती करके धर्म परिवर्तन करवाया तथा महिलाओं के साथ ज्यादतियां शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं ने स्त्रियों पर अनेक प्रतिबंधात्मक निर्देशों और स्मृतिकारों की मनगढ़ंत बातों को धार्मिक स्वीकृति प्रदान की गई। यह भी कहा गया कि स्त्री को कभी अकेली नहीं रहना चाहिए। उसे हमेशा किसी न किसी के संरक्षण में ही रहना चाहिए। बाल्यावस्था में पिता के, युवावस्था में पति के और वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रहने का विधान भी इसी युग की देन है।

प्राचीन और मध्ययुगीन युग के हिन्दू ग्रंथ, और महाकाव्य, एक स्पेक्ट्रम पर समाज में एक महिला की स्थिति और भूमिका पर चर्चा करते हैं, जैसे कि एक आत्मनिर्भर विवाह से बचने वाली शक्तिशाली देवी, जो अधीनस्थ है और जिसकी पहचान पुरूषों द्वारा परिभाषित की जाती है। उसके बजाय, और जो खुद को एक इंसान और आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में देखता है, जबकि न तो स्त्री और न ही मर्दाना। 6वीं शताब्दी का देवी महात्म्य पाठ, उदाहरण के लिए, सिंथिया ह्यूम्स कहता है, वास्तव में ''देहाकार के उत्तर आधुनिक उत्थान, इसे दिव्यता के रूप में पश्चिमी नारीवादी आध्यात्मिकता आंदोलन के रूप में साझा करता है। ये ग्रंथ सैद्धांतिक नहीं है और न ही ऐतिहासिक हिन्दू समाज में महिलाओं के जीवन से अलग हैं, लेकिन छंद इस बात पर जोर देते हैं कि सभी महिलाएं दिव्य देवी के अंश हैं।'' ह्यूम्स कहते हैं कि इन ग्रंथों से प्रेरित हिन्दू देवी परंपरा रही है। पिंचमैन, दुनिया भर में सबसे अमीर, सम्मोहक परंपराओं में से एक है और इसके अनुयायी पूरे भारत में गांवों, कस्बों और शहरों में आते हैं। फिर भी ह्यूम्स कहते हैं, अन्य ग्रंथ उसकी रचनात्मक क्षमता का वर्णन उसकी शर्तों में नहीं करते हैं, लेकिन पुरूष पौरूष और लिंग के द्विभाजन के शब्दों का उपयोग करते हुए, संभवतः वीर महिला को अपनी महिला व्यक्तित्व को त्यागने और पुरूष का प्रतिरूपण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

## 19वीं सदी में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

1880 के दशक तक आते–आते भारतीय महिलाएं विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने लगी थीं। उनमें से कुछ चिकित्सक और कुछ शिक्षिका बन गईं। बहुत सारी महिलाएं लिखने लगीं और उन्होंने समाज में महिलाओं की स्थिति पर अपने आलोचनात्मक विचार प्रकाशित किए। पूना में घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाली तारा बाई शिंदे ने स्त्रीपुरूष तुलना नाम से एक किताब प्रकाशित की जिसमें पुरूषों और महिलाओं के बीच मौजूद सामाजिक फर्कों की आलोचना की गई थी।

संस्कृत के महान विद्वान पंडिता रमाबाई का मानना था कि हिन्दू धर्म महिलाओं का दमन करता है। उन्होंने ऊंची जातियों की हिन्दू महिलाओं की दुर्दशा पर एक किताब भी लिखी थी। उन्होंने पूना में एक विधवागृह की स्थापना की जहां ससुराल वालों के हांथों अत्याचार झेल रही महिलाओं को पनाह दी जाती थी जिनके सहारे वे अपनी रोजी–रोटी चला सकें।

जाहिर है कि इन बस बातों से रूढ़िवादी खेमे के लोग काफी आग–बबूला हुए। उदाहरण के लिए बहुत सारे हिन्दू राष्ट्रवादियों को लगने लगा था कि हिन्दू महिलाएं पश्चिमी तौर–तरीके अपना रही है जिससे हिन्दू संस्कृति भ्रष्ट होगी और पारिवारिक संस्कार नष्ट हो जायेंगे। रूढ़िवादी मुसलमान भी इन बदलावों के नतीजों को लेकर चिंचित थे।

उन्नीसवीं सदी के आखिर तक खुद महिलाएं भी सुधारों के लिए बढ़–चढ़कर प्रयास करने लगी थीं। उन्होंने किताबें लिखीं, पत्रिकाएं निकालीं, स्कूल और प्रशिक्षण केन्द्र खोले तथा महिलाओं को संगठित किया। बीसवीं सदी की शुरूआत से वे महिलाओं को मताधिकार, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और शिक्षा के अधिकार के बारे में कानून बनवाने के लिए राजनीतिक दबाव समूह बनाने लगी थीं। उनमें से कुछ महिलाओं ने 1920 के दशक के बाद विभिन्न प्रकार के राष्ट्रवादी और समाजवादी आंदालनों में हिस्सा भी लिया।

## आधुनिक युग में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

आधुनिक युग की पश्चिमी विद्वता में एक व्यापक और गहरा विश्वास रहा है। प्रोफेसर कैथलीन एर्नडल कहते हैं, ''हिन्दू धर्म में महिलाओं को सार्वभौमिक रूप से अधीन किया जाता है और नारीवाद, हालांकि इसे परिभाषित किया जा सकता है, पश्चिम की एक कलाकृति है। उत्तर आधुनिक विद्वानों का सवाल है कि क्या उन्होंने इस औपनिवेशिक रूढ़िवादिता और लंबे समय से चली आ रही धारण को '' अनजाने में स्वीकार'' किया है। विशेष रूप से हिन्दू शक्ति परंपरा से संबंधित ग्रंथों की उभरती समझ और महिलाओं के अनुभवजन्य अध्ययन को देखते हुए ग्रामीण भारत जिनका पश्चिमी विचार या शिक्षा से कोई संपर्क नहीं है, लेकिन वे अपने हिन्दू (या बौद्ध) देवी–प्रेरित नारीवाद पर जोर देते हैं।

पश्चिमी नारीवाद, वसुधा नारायणन ने कहा ''सबमिशन और शक्ति के मुद्‌दों पर बाचतीत करने पर ध्यान केन्द्रित किया है क्योंकि यह अवसर के इलाकों को समतल करना चाहता है।'' और अधिकारों की भाषा का उपयोग करता है। हिंदू धर्म में, प्रासंगिकत और सांस्कृतिक शब्द धर्म रहा है जो स्वयं के प्रति, दूसरों के प्रति, अन्य बातों के अलावा, कर्त्तव्यों के बारे में है। उन ग्रंथों के आधार पर हिंदू परंपरा के भीतर हिंदू धर्म और महिलाओं के संघर्ष का वर्णन करने वाली पश्चिमी पुस्तकों के बीच एक अंतर रहा है।

बीसवीं सदी की शुरूआत से ही बहुत सारी मुस्लिम महिलाओं ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अहम भूमिका अदा की। जैसे, भोपाल की बेगमों ने अलीगढ़ में लड़कियों के लिए प्राथमिक स्कूल खोला। बेगम रूकैया सखावत हुसैन भी इस दौर की एक प्रभावशाली महिला थीं जिन्होंने कलकत्ता और पटना में मुस्लिम लड़कियों के लिए स्कूल खोले। राजा राममोहन राय देश में पश्चिमी शिक्षा का प्रसार करने और महिलाओं के लिए ज्यादा स्वतंत्रता व समानता के पक्षधर थे। उन्होंने इस बारे में लिखा है कि किस तरह महिलाओं को जबरन घरेलू कामों से बांधकर रखा जाता था। उनकी दुनिया घर और रसोई तक ही सीमित कर दी जाती थी और उन्हें बाहर जाकर पढ़ने–लिखने की इजाजत नही दी जाती थी।

राजा राममोहन रॉय इस बात से काफी दुखी थे कि विधवा औरतों को अपनी जिंदगी में भारी कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने सती प्रथा के खिलाफ मुहिम छेड़ी थी।

राजा राममोहन रॉय संस्कृत, फारसी तथा अन्य कई भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने अपने लेखन के जरिए यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन ग्रंथों में विधवाओं को जलाने की अनुमति कहीं नहीं दी गई है। 19वीं सदी के प्रारंभ तक बहुत सारे अंग्रेज अफसर भी भारतीय परंपराओं और रीति–रिवाजों की आलोचना करने लगे थे। वे राममोहन रॉय के विचारों को सहीं मानते थे क्योंकि उनकी एक विद्वान व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठा थी। फलस्वरूप, 1829 में सती प्रथा पर पाबंदी लगा दी गई।

राममोहन रॉय ने इस अभियान के लिए जो रणनीति अपनाई उसे बाद में सुधारकों ने भी अपनाया। जब भी वे किसी हानिकारक प्रथा को चुनौती देना चाहते थे तो अक्सर प्राचीन धार्मिक ग्रंथों से ऐसे श्लोक या वाक्य ढुंढने का प्रयास करते थे जो उनकी सोच का समर्थन करते हों। इसके बाद वे दलील देते थे कि संबंधित वर्तमान रीति–रिवाज प्रारंभिक परंपरा के खिलाफ है।

## 20वीं सदी में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

20वीं सदी के इतिहास के संदर्भ में, हिन्दू धर्म और अधिक सामान्यतः भारत में महिलाओं की स्थिति में कई विरोधाभाष हैं। क्षेत्रीय हिन्दू परंपराओं को मातृसत्तात्मक समाजों के रूप में संगठित किया जाता है जहां महिला घर की मुखिया होती है और संपत्ति का उत्तराधिकारी होता है फिर भी अन्य हिन्दू परंपराएं पितृसत्तात्मक हैं। एक महिला को एक अधीनस्थ भूमिका में मानते हैं।

भारत में महिला अधिकार आंदोलन, शर्मा कहते हैं दो मूलभूत हिन्दू अवधारणाओं – लोकसंगह और सत्याग्रह से प्रेरित है। लोकसंग्रह को दुनिया का कल्याण के लिए कार्य करना और सत्याग्रह सत्य पर जोर देना के रूप में परिभाषित किया गया है। इन आदर्शों का उपयोग राजनीतिक और कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक परिवर्तन के लिए महिलाओं के बीच आंदोलनों को सही ठहराने और प्रोत्साहित करने के लिए किया गया था। 1975 में प्रकाशित अपने लेख में फेन ने टिप्पणी की, कि यह ''महिलाओं को सम्मानित किया जाता है, जिम्मेदारी के लिए सबसे सक्षम माना जाता है, मजबूत'' की अंतर्निहित हिन्दू मान्यता है जिसने इंदिरा गांधी को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य बनाया।

20वीं शताब्दी में जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं ने महिलाओं के लिए और अधिक स्वतंत्रता व समानता की मांगों का समर्थन किया। राष्ट्रीय नेताओं ने आश्वासन दिया कि स्वतंत्रता मिलने पर सभी पुरूषों व महिलाओं को वोट डालने का अधिकार दे दिया जाएगा परंतु उनका आह्वान था कि जब तक स्वतंत्रता नहीं मिल जाती तब तक महिलाओं को अंग्रेजी राज विरोधी संघर्ष में ही जोर लगाना चाहिए। बहुत सारे सुधारकों को लगता था कि महिलाओं की दशा सुधारने के लिए लड़कियों को शिक्षित करना जरूरी है।

कलकत्ता में विद्यासागर और बम्बई में बहुत सारे अन्य सुधारकों ने लड़कियों के लिए स्कूल खोले। उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब इस तरह के प्रारंभिक स्कूल खुले तो बहुत सारे लोग उनसे डरते थे। लोगों को भय था कि स्कूल वाले लड़कियों को घर से निकाल ले जाएंगे और उन्हें घरेलू कामकाज नहीं करने देंगे। स्कूल जाने के लिए लड़कियों को सार्वजनिक स्थानों से गुजरकर जाना पड़ता था। बहुत सारे लोगों को लगता था कि इससे लड़कियां बिगड़ जायेंगी। उनकी मान्यता थी कि लड़कियों को सार्वजनिक स्थानों से दूर रखना चाहिए। फलस्वरूप, उन्नीसवीं सदी में पढ़ने–लिखने वाली ज्यादातर महिलाओं को उनके उदार विचारों वाले पिता या पति की देखरेख में घर पर ही पढ़ाया जाता रहा। कई महिलाओं ने बिना किसी की मदद लिए खुद ही पढ़ना–लिखना सीखा।

## वर्तमान समय में हिन्दू महिलाओं की स्थिति

राजनीति का सुनहरा आकाश हो या बिजनेस का चमकीला गगन, अंतरिक्ष का वैज्ञानिक सफर हो या खेत–खलिहान का हरा–भरा आंगन, हर जगह आज की नारी अपनी चमक बिखेर रही है। अपनी सफलता का परचम लहरा रही है। आज घर की दहलीज पार कर बाहर निकल कर अपनी काबिलियत का लोहा मनवाने वाली महिलाओं की संख्या में दिन महिलाओं की संख्या में दिन–दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो रही है। पुरूषों के वर्चस्व को तोड़ती हुई महिलाएं आज हर क्षेत्र में घुसपैठ कर चुकी हैं और यह घुसपैठ मात्र पाला छूने भर की घुसपैठ नहीं है वरन कब्जा जमाने की मजबूत दावेदारी है और इसीलिए पुरूषों की तिलमिलाहट स्वाभाविक है। सदियों से जिस स्थान पर पुरूष जमें हुए थे और नारी को अपने पैरों तले रखने की कालजयी महत्वाकांक्षी पाले हुए थे। आज यहां की धरती खिसक चुकी है। भारत एक धर्म–प्रधान देश है और यहां हिन्दू–धर्मावलंबी बहुतायत में हैं। धर्म यहां लोगों की जीवन शैली पर सर्वप्रमुख रूप से राज करता है और धर्म के ठेकेदारों ने यहां पुरूष वर्चस्व को कायम रखते हुए धर्म के संरक्षक, पालनकर्ता आदि प्रमुख पदों पर पुरूषों को ही रखा।

यद्यपि वर्तमान भारतीय समाज पश्चिमी दुनिया की तरह लिंग–समान नहीं है लेकिन इसका हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों से शायद ही कोई लेना–देना है। विद्वानों का कहना है कि दूसरी सहस्त्राब्दी सीई के बाद सामाजिक–राजनीतिक विकास के साथ भारतीय समाज के विभिन्न सामाजिक आदेश आए। हालांकि, आधुनिक हिन्दू आबादी अपनी गलतियों से बहुत कुछ सीख रही है और पुराने सनातन धर्म के लैंगिक समानता के सिद्धांत को लाने के मिशन पर है।

## संदर्भ ग्रंथ–


1. ब्हौरा, आशा रानी, प्राचीन काल से मध्यकाल तक, ,1 नवंबर, 2007
2. पुरूषों को भी न्याय मिले, सरोकार की मीडिया, ,21 मई 2010
3. वैदिक काल,
4. भारत में महिलाएं, वही
5. लता, डॉ. मंजु, अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, अर्जून पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2010, पृ.क्र. 5
6. कौर, डॉ. अंजुमन दीप, कामकाजी नारीः उपलब्धि और संताप के दायरों में, दीपक
7. सदीं की ओर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.
8. पाटिल, डॉ. अशोक डी., डॉ. एस. एस. भदौरिया, भारतीय समाज, 2007, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
9. सिंह, चेतन चंद्र, क्या अपराध है औरत होना?, ग्रंथ विकास, जयपुर, 2009 पृ, 17
10. वही, पृ. 30
11. वर्मा, डॉ. ओ. पी., भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2004, पृ. 371
12. लता, डॉ. मंजु, अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, अर्जून पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010। पृ. 6
13. यादव, राजेन्द्र, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ. 15
14. वही
15. मनीषा, हम सभ्य औरतें, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 पृ. 15
16. वही पृ. 14
17. वही पृ. 31
18. जैन, डॉ. सुधा, आधुनिक नारी दशा और दिशाएं, सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली 2004 पृ. 46
19. सिंह, चेतन चंद्र, क्या अपराध है औरत होना?, ग्रंथ विकास, जयपुर, 2009 पृ, 51